International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 23-02-2026, Accepted: 25-03-2026, Published: 09-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 28-31

"मन्नू भंडारी की कहानियों में मध्यवर्गीय नारी का संघर्ष"

कैलाश चन्द्र खटीक[1], डॉ. रामकृष्ण शर्मा[2]
[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभागए ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत
[2] शोध निर्देशक, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
लेखिका मन्नू भण्डारी ने अपनी कहानियों के माध्यम से मध्यवर्गीय स्त्री के जीवन–संघर्ष को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। उनकी रचनाओं में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि मध्यवर्गीय महिला केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित रहने वाली पात्र नहीं है, बल्कि बदलते सामाजिक परिवेश में वह अपनी पहचान स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहती है। उनकी कहानियाँ मध्यवर्गीय स्त्री के मानसिक द्वंद्व, सामाजिक दबाव, पारिवारिक दायित्व तथा भावनात्मक पीड़ा को यथार्थपरक रूप में प्रस्तुत करती हैं। लेखिका ने नारी के आत्मसम्मान, स्वतंत्र अस्तित्व और सामाजिक परिस्थितियों के बीच उत्पन्न संघर्ष को संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। इसी कारण उनके कथा–साहित्य में मध्यवर्गीय महिला की पीड़ा, असुरक्षा, अकेलापन तथा आत्मसंघर्ष प्रमुख रूप से उभरकर सामने आते हैं।
साथ ही उनकी कहानियों में यह भी स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आता है कि मध्यवर्गीय स्त्रियाँ एक ओर परंपराओं और सामाजिक बंधनों से घिरी हुई हैं, तो दूसरी ओर वे उन्हीं बंधनों के विरुद्ध अपनी स्वतंत्रता और अधिकारों के लिए आवाज उठाने का साहस भी रखती हैं। उनमें विकसित होती जागरूकता और आत्मचेतना इस बात का प्रमाण है कि वे अपनी अस्मिता और अस्तित्व के प्रति सजग हो चुकी हैं। इस प्रकार मन्नू भण्डारी की कहानियाँ मध्यवर्गीय महिला के संघर्ष, संवेदनाओं और बदलते सामाजिक मूल्यों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करते हुए हिन्दी कथा–साहित्य में नारी–विमर्श के महत्वपूर्ण आयामों को उजागर करती हैं।

मूल शब्दः मध्यवर्गीय नारी, सामाजिकता, स्वाभिमान, आत्मनिर्भरता, मानवीय संवेदना, संवेदनशीलता, पारिवारिक मर्यादा, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ

भारतीय समाज की संरचना में मध्यवर्गीय स्त्री का जीवन विशेष रूप से जटिल परिस्थितियों से घिरा हुआ दिखाई देता है। परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाए रखने का दायित्व प्रायः उसी पर आ पड़ता है। एक ओर परिवार, संस्कार और सामाजिक मर्यादाओं की अपेक्षाएँ हैं, तो दूसरी ओर शिक्षा, आत्मनिर्भरता तथा व्यक्तित्व की स्वतंत्र पहचान स्थापित करने की आकांक्षा भी उसके भीतर सक्रिय रहती है। इसी कारण मध्यवर्गीय महिला का जीवन निरंतर संघर्ष, समायोजन और आत्म–संघर्ष की प्रक्रिया से गुजरता हुआ दिखाई देता है।
मध्यवर्गीय स्त्री का संघर्ष केवल आर्थिक या सामाजिक स्तर तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह मानसिक और भावनात्मक स्तर पर भी गहन अनुभवों से होकर गुजरती है। परिवार की जिम्मेदारियाँ, बच्चों का पालन–पोषण, सामाजिक अपेक्षाएँ और अपने व्यक्तिगत सपनों के बीच संतुलन बनाना उसके जीवन की एक बड़ी चुनौती बन जाता है। अनेक बार उसे अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं का त्याग भी करना पड़ता है, फिर भी वह परिवार और समाज की संरचना को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बदलते समय के साथ मध्यवर्गीय महिला की चेतना में भी उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। शिक्षा, जागरूकता तथा सामाजिक परिवर्तनों ने उसे अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति अधिक सचेत बनाया है। अब वह केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित रहने के बजाय अपने व्यक्तित्व, आत्मसम्मान और स्वतंत्र अस्तित्व को स्थापित करने का प्रयास करती दिखाई देती है। इस प्रक्रिया में उसे अनेक बाधाओं और सामाजिक रूढ़ियों का सामना करना पड़ता है, फिर भी वह अपने धैर्य, साहस और दृढ़ संकल्प के माध्यम से आगे बढ़ने का प्रयास करती रहती है।
इस प्रकार मध्यवर्गीय महिला का जीवन संघर्ष, संवेदना, जिम्मेदारी और आत्मसम्मान का एक जटिल संगम है। वह परिवार और समाज के बीच सेतु का कार्य करते हुए न केवल अपने कर्तव्यों का निर्वाह करती है, बल्कि बदलते सामाजिक परिवेश में नई संभावनाओं और नई पहचान की दिशा में भी निरंतर अग्रसर दिखाई देती है। यही कारण है कि आधुनिक साहित्य में मन्नू भंडारी के उपन्यासों एवं कहानियों में मध्यवर्गीय स्त्री के अनुभवों और संघर्षों को विशेष महत्व के साथ अभिव्यक्त किया गया है, जिसे आज के परिवेश के साथ अध्ययन की आवश्यकता है।

लेखिका मन्नू भंडारी: जन्म एवं जीवन

सुप्रसिद्ध हिन्दी लेखिका श्रीमती मन्नू भण्डारी का जन्म अप्रैल 1934 ई. में मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले के भानपुरा नामक छोटे से कस्बे में हुआ। उनका प्रारम्भिक नाम महेन्द्र कुमारी था। वे अपने माता–पिता की पाँचवीं संतान थीं। परिवार में उनसे बड़े दो भाई–प्रसन्न कुमार और वसंत कुमार थे तथा दो बड़ी बहनें स्नेहलता और सुशीला थीं। बाल्यकाल से ही उन्हें अपने भाई–बहनों का स्नेह और आत्मीयता प्राप्त होती रही, जिसने उनके व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
मन्नू भण्डारी के पिता का नाम श्री सुखसंपत राय था, जो विद्वान, स्वाभिमानी और आदर्शवादी व्यक्तित्व के धनी थे। हिन्दी भाषा के विकास में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा, विशेष रूप से हिन्दी पारिभाषिक शब्दकोश के निर्माण से उनका नाम जुड़ा हुआ माना जाता है। वे एक संयुक्त मारवाड़ी परिवार से संबंध रखते थे, जहाँ पारिवारिक संस्कार, अनुशासन और आत्मसम्मान को विशेष महत्व दिया जाता था। स्वभाव से वे कुछ कठोर और स्पष्टवादी थे, परंतु भीतर से अत्यंत सिद्धांतनिष्ठ और देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत थे। मन्नू अपनी आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में कहती हैं कि– "जन्मी तो मध्य प्रदेश के भानपुरा गाँव में थी, लेकिन मेरी यादों का सिलसिला शुरू होता है अजमेर के ब्रहमपुरी मोहल्ले के उस दो मंजिले मकान से जिसकी ऊपरी मंजिल में पिता जी का साम्राज्य था, जहाँ के निहायत अवस्थित ढंग से फैली बिखरी पुस्तकों–पत्रिकाओं और अखबारों के बीच या

तो कुछ पढ़ते रहते थे या फिर डिक्टेशन देते थे।"[1] मन्नू अपने पिता से बहुत प्रेम करती थी, इसीलिए वह अपने कहानी संग्रह 'मैं हाथ गई' को अपने पिता को समर्पित करते हुए लिखती हैं– "जिन्होंने मेरी किसी भी इच्छा पर कभी अंकुश नहीं लगाया। पिता जी को।"[2]

इन्होंने आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने अपने जीवन में आत्मसम्मान को सर्वोपरि रखा। विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए भी उन्होंने कभी किसी से सहायता लेने की प्रवृत्ति नहीं अपनाई। उनके व्यक्तित्व में स्वाभिमान, आत्मनिर्भरता और आदर्शों के प्रति गहरी निष्ठा स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी। देश के प्रति उनकी गहरी संवेदना और समर्पण की भावना परिवार के सदस्यों के लिए भी प्रेरणास्रोत रही। जीवन के अंतिम दिनों में वे कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से पीड़ित रहे और अंततः इसी कारण उनका निधन हुआ।

मन्नू भण्डारी का विवाह प्रसिद्ध साहित्यकार राजेन्द्र यादव के साथ हुआ। पारिवारिक परिस्थितियों तथा विचारों के भिन्न दृष्टिकोण के कारण उनके पिता को यह संबंध पूरी तरह स्वीकार्य नहीं था। कहा जाता है कि इसी कारण वे अपने जीवन के अंतिम समय तक अपने दामाद से नहीं मिल सके। फिर भी इन सभी परिस्थितियों के बीच मन्नू भण्डारी ने अपने साहित्यिक व्यक्तित्व को निरंतर विकसित किया और आगे चलकर हिन्दी कथा–साहित्य की प्रमुख लेखिकाओं में स्थान प्राप्त किया। वे बालीगंज शिक्षा सदन में बिताए गए नौ वर्ष के महत्वपूर्ण समय को जीवन का अहम हिस्सा बताती है। वे कहती हैं कि "बालीगंज शिक्षा सदन में गुजारे नौ वर्ष मेरी जिंदगी के बहुत महत्त्वपूर्ण वर्ष रहे हैं, जिंदगी के सभी महत्त्वपूर्ण मोड़ यहीं से तो आए, यही मैंने अपनी पहली कहानी लिखी और साहित्य के क्षेत्र में कदम रखा... इसी स्कूल की लाइब्रेरी के लिए किताबें मंगवाने के सिलसिले में राजेन्द्र से परिचय हुआ... विवाह हुआ और गृहस्थी में प्रवेश किया यहीं काम करते हुए बिटिया का जन्म हुआ, जिन्दगी के सभी महत्त्वपूर्ण मोड़ यहीं आए।"[3]

अघोषित नारीवादी लेखिका के रूप में अपनी छवि स्थापित करने वाली मन्नू भंडारी ने जीवन में बहुत कुछ सहा एवं संघर्ष किया है। भारतीय पुरुष प्रधान समाज के अनुरूप एक पति या परिवार के मुखिया के रूप में अपेक्षित कर्तव्यों व जिम्मेदारियों से पूर्णतः भागने वाले पति राजेन्द्र यादव के साथ पूर्ण समर्पण भाव के साथ अपना पत्नी एवं माँ का कर्तव्य बिना किसी विरोध के निभाते हुए मन्नूजी ने स्त्री के अस्तित्व को असीम दृढ़ता प्रदान की।

मन्नू ने अपने साथ हुए अन्याय का खुलकर विरोध कभी नहीं किया अपितु वह उस अन्याय को निरन्तर सहती रही। अपनी रचनाओं के माध्यम से मन्नू ने जो कथाएं लिखी वह उनकी अपने जीवन की एवं परिवेशीय घटनाओं की वास्तविक कथाएं जान पड़ती है। मन्नू भंडारी का संघर्ष और स्वाभिमानी व्यक्तित्व वर्तमान समय की भौतिक सुख–सुविधाओं व स्वेच्छाचारी जीवन की कामना रखने वाले स्त्री समाज को भोगवादी जीवन के बजाय अपने स्त्रीत्व को किस तरह से स्थापित किया जाएं, का सबक लेना चाहिए। मन्नू भंडारी अपने पति के द्वारा किए गए अनैतिक व्यवहार को जिस प्रकार से सहती गई वह उनके स्त्रीत्व को मजबूती प्रदान करता है। मन्नू भंडारी के साथ–साथ "दुनिया भर में नारीवादियों एवं मानववादियों ने औरत के हकों एवं आबरू की हिफाजत के लिए लगातार संघर्ष किए हैं और बहुत कुछ लिखा भी है जो इस दिशा में मील के पत्थर साबित हुए हैं।"[4]

मन्नू का साहित्यिक दृष्टिकोण

हिन्दी साहित्य में लेखिकाओं द्वारा सृजित साहित्यिक परंपरा के अंतर्गत मन्नू भण्डारी का योगदान अत्यंत उल्लेखनीय माना जाता है। उनकी रचनाएँ हिन्दी कथा–साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करती हैं। उनके साहित्य का प्रमुख केन्द्र नारी जीवन और उससे जुड़ी सामाजिक परिस्थितियाँ रही हैं। लेखिका ने समाज में स्त्री के प्रति विद्यमान दृष्टिकोण, उसकी स्थिति, संघर्ष तथा संवेदनाओं को गहन संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है। मन्नू भण्डारी एक प्रभावशाली एवं सशक्त कहानीकार के रूप में प्रतिष्ठित हुई हैं। उनके कथा–साहित्य में सामाजिक जीवन की वास्तविकताओं, मानवीय संबंधों तथा बदलते मूल्यों का सजीव चित्रण दिखाई देता है।

मन्नू भण्डारी की कहानियाँ और उपन्यासों में समाज के यथार्थ को उजागर करने के साथ–साथ स्त्री जीवन के विविध पक्षों को भी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती हैं। जहाँ कहीं भी स्त्री के शोषण, अन्याय या असमानता की स्थिति दिखाई देती है, वहाँ लेखिका का दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से विरोध और प्रश्नाकुलता के रूप में सामने आता है। मानवीय संवेदनाओं के संदर्भ में विचार करने पर यह भी प्रतीत होता है कि लेखिका ने नारी को अधिक संवेदनशील, सहनशील और मानवीय गुणों से युक्त रूप में चित्रित किया है। मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास में स्त्री की भूमिका को भी उन्होंने अत्यंत महत्वपूर्ण माना है। मन्नू की लेखन यात्रा के बारे में उनकी बेटी रचना यादव कहती हैं कि "अपनी लेखन यात्रा के पहले बीस से पच्चीस वर्ष के दौर की अपनी कहानियों द्वारा मन्नू जी ने इतनी महिलाओं को प्रेरित किया, झकझोरा, एक तरह से उन्हें ललकारा, उनके भीतर की आग को सुलगाया, कि वे बहुत स्वाभाविक रूप से आधुनिक हिन्दी साहित्य और समाज की सशक्त नारीवादी लेखिका हो जाती हैं।"[5]

कथा–विधा के क्षेत्र में स्त्री संघर्ष की सिरमौर लेखिका मन्नू भण्डारी का योगदान विशेष महत्व रखता है। उनकी कहानियों में मध्यवर्गीय महिला के जीवन–संबंधी अनुभवों की सच्चाई तथा सामाजिक परिवेश की वास्तविकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनकी रचनाएँ केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि समाज की अनेक जटिल स्थितियों, मानवीय संबंधों तथा स्त्री जीवन के संघर्षों को भी गहराई से अभिव्यक्त करती हैं। "उनके व्यक्तित्व में एक खास बात है कि यश के पीछे, पुरस्कारों के प्रति उन्होंने कतई दिलचस्पी नहीं दिखाई।"[6] इसी कारण मन्नू भण्डारी का कथा–साहित्य हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में स्वीकार किया जाता है।

मध्यवर्गीय नारी का संघर्ष

हिन्दी कथा साहित्य की परंपरा में मन्नू भण्डारी का नाम एक प्रभावशाली और महत्वपूर्ण लेखिका के रूप में प्रतिष्ठित है। उन्होंने अपने कथा–साहित्य के माध्यम से समाज में स्त्री जीवन से जुड़ी अनेक जटिल स्थितियों और अनुभवों को संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है। उनकी कहानियाँ विशेष रूप से नारी के अस्तित्व, आत्मसम्मान तथा संघर्ष से संबंधित प्रश्नों को उजागर करती हैं। स्त्री की स्थिति, उसकी पीड़ा, उसके अधिकारों तथा सामाजिक बंधनों के बीच चलने वाले आंतरिक द्वंद्व को लेखिका ने अत्यंत मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। कहानी "एक बार और" की नायिका बिन्नी ऐसे मानसिक द्वंद्व में दिखाई देती है जहाँ उसका जीवन दो राहों के बीच उलझा हुआ है। वह कुंज से गहरा प्रेम करती है और लंबे समय तक उसके साथ भावनात्मक संबंध बनाए रखती है। बिन्नी अपने जीवन और व्यक्तित्व को पूर्ण रूप से कुंज के प्रति समर्पित कर देती है, इसलिए जब कुंज किसी दूसरी स्त्री—मधु—से विवाह कर लेता है, तब यह घटना बिन्नी के लिए गहरा आघात बन जाती है। इस स्थिति के कारण वह भीतर से टूट जाती है और अपने जीवन को संभालना उसके लिए कठिन हो जाता है। विवाह के बाद भी कुंज और बिन्नी के बीच संबंध पूरी तरह समाप्त नहीं होते, परंतु उनमें आत्मीयता और स्थायित्व का अभाव दिखाई देता है। बिन्नी के मन में कुंज की स्मृतियाँ इतनी गहराई से बस चुकी हैं कि वह अन्य पुरुषों को भी उसी दृष्टि से देखने लगती है।

परिणामस्वरूप उसका जीवन एक ऐसे खालीपन और असमंजस से भर जाता है, जहाँ वह न अतीत से मुक्त हो पाती है और न ही भविष्य को सहज रूप से स्वीकार कर पाती है। लेखिका इस स्थिति को इस प्रकार उद्वेलित करती है, वह कहती हैं– "जो कोमल तन्तु उन दोनों को वर्षों से बांधे चला आ रहा था आज जैसे वह टूट गया है उन दोनों के बीच कुछ था जो मर गया है। टूटने–मरने का यह बोध रात में और भी गहरा हो गया था जब दो लाशों की तरह वे साथ सोए थे।"[7] मन्नू की 'बन्द दराज़ों का साथ' और 'बाँहों का घेरा' कहानियां भी कुछ इसी तरह के घटनाक्रम को चित्रित करती है।

मन्नू भण्डारी की रचनाओं में नारी जीवन के विविध आयामों का यथार्थपरक चित्रण दिखाई देता है। उनकी कहानियाँ केवल व्यक्तिगत अनुभवों तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि व्यापक सामाजिक संदर्भों को भी अपने भीतर समाहित करती हैं। स्त्री की सामाजिक स्थिति, आर्थिक निर्भरता, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ तथा धार्मिक मान्यताओं से उत्पन्न दबाव जैसे अनेक पक्ष उनकी कथाओं में उभरकर सामने आते हैं। मन्नू की 'घुटन' कहानी की मुख्य पात्र मोना के जीवन में इसी प्रकार की परिस्थितियां उभरकर सामने आती है। मोना कहानी में अविवाहित युवती के रूप में प्रस्तुत की गई है। वह अरुप नामक युवक के प्रति गहरा स्नेह और आकर्षण अनुभव करती है। मोना अपने मन की भावनाओं को केवल अपने तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसकी विधवा माँ को भी उसके प्रेम संबंध की जानकारी हो जाती है। इसके अतिरिक्त वह अपनी पड़ोसन प्रतिमा के साथ भी अरुप के विषय में अक्सर बातचीत करती रहती है। अरुप का मोना के घर आना–जाना भी लगा रहता है, जिससे दोनों के संबंधों की निकटता स्पष्ट दिखाई देती है। मोना का पारिवारिक जीवन भी अनेक जिम्मेदारियों से भरा हुआ है। उसके घर में उसकी विधवा माँ के साथ छोटे भाई–बहन रहते हैं, जिनकी देखभाल और आवश्यकताओं का दायित्व मुख्य रूप से उसी पर आ पड़ता है। मोना अरुप से विवाह करना चाहती है किन्तु उसकी मां इसके खिलाफ हैं। उसे यह चिंता सताती है कि "मोना ब्याह कर लेगी तो उसके छोटे भाई–बहिनों को कौन पालेगा।"[8] इस प्रकार मोना अपने व्यक्तिगत भावनात्मक जीवन और पारिवारिक कर्तव्यों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करती दिखाई देती है।

इन सभी परिस्थितियों के बीच स्त्री की चेतना, आत्मसम्मान और स्वतंत्र पहचान की आकांक्षा भी स्पष्ट रूप से व्यक्त होती है।

मन्नू भण्डारी की कहानियों में द्वंद्व प्रमुखता से दिखाई देता है। कहानी "नकली हीरे" वास्तविक जीवन और आडंबरपूर्ण दिखावे के बीच उपस्थित अंतर को उजागर करती है। इस कथा में दो बहनोंकृसरन और इन्दु के जीवन के माध्यम से सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया गया है। इन्दु अपने मन की इच्छा के अनुसार अंतरजातीय प्रेम–विवाह करती है। उसका पति पेशे से अध्यापक है और दोनों के बीच गहरा स्नेह तथा आत्मीय संबंध दिखाई देता है। साधारण जीवन के बावजूद उनके वैवाहिक संबंधों में संतोष और अपनापन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। दूसरी ओर सरन का जीवन भौतिक दृष्टि से संपन्न प्रतीत होता है। उसके पति एक बड़े व्यवसायी हैं और अनेक मिलों के स्वामी हैं। आर्थिक समृद्धि के बावजूद उसके वैवाहिक जीवन में भावनात्मक निकटता का अभाव दिखाई देता है। पति प्रायः दूर रहने के कारण सरन को उसके प्रेम और साथ से वंचित रहना पड़ता है। इस प्रकार कहानी के माध्यम से यह संकेत मिलता है कि बाहरी वैभव और वास्तविक सुख के बीच अक्सर गहरा अंतर होता है।

वहीं मन्नू भंडारी की कहानी 'कील और कसक' में मध्यवर्गीय स्त्री के जीवन–संघर्ष को दर्शाया गया है। कथा की नायिका रानी का विवाह कैलाश नामक व्यक्ति से होता है, जिसका स्वभाव कठोर और उपेक्षापूर्ण है। वह रानी से ठीक प्रकार से बात भी नहीं करता, जिसके कारण रानी का जीवन उदासी और मानसिक पीड़ा से भर जाता है। सामाजिक मर्यादा और लोकलाज के कारण वह अपनी स्थिति के बारे में खुलकर कुछ कह नहीं पाती। विवाह के समय कैलाश के परिवार की स्थिति को संपन्न दिखाने के लिए दिखावटी व्यवस्था की जाती है, किंतु शीघ्र ही वास्तविकता सामने आ जाती है। कैलाश कपड़ों पर प्रेस करने का कार्य करता है और अपने काम में इतना व्यस्त रहता है कि पत्नी के प्रति ध्यान नहीं देता। परिणामस्वरूप रानी भीतर ही भीतर घुटन और अकेलेपन का अनुभव करती रहती है। यह कहानी स्त्री के दांपत्य जीवन में उपस्थित उपेक्षा और मानसिक संघर्ष को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करती है। कहानी स्त्री–सुबोधिनी' भी इसी प्रकार के घटनाक्रम को सामने लाती है। जिसमें विवाहित पुरुष द्वारा एक प्रेमिका के तन, मन को बड़ी चतुराई से छलने की दर्द भरी कहानी है।

मन्नू भण्डारी की कहानी "एक कमजोर लड़की की कहानी" एक ऐसी युवती के मानसिक द्वंद्व को प्रस्तुत करती है, जो प्रेम और पारिवारिक मर्यादाओं के बीच उलझी हुई दिखाई देती है। कथा की नायिका एक मध्यवर्गीय स्त्री है, जिसके भीतर अपने प्रेमी ललित के प्रति गहरी भावनाएँ मौजूद हैं। इसके बावजूद सामाजिक परंपराएँ और संस्कार उसके निर्णय को प्रभावित करते हैं। नायिका अपने वैवाहिक जीवन और पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण किसी भी प्रकार का ऐसा कदम उठाने का साहस नहीं कर पाती, जिससे उसके ईमानदार पति के साथ अन्याय हो। पति के घर में किसी भी वस्तु, नौकर–चाकर आदि की कोई कमी नहीं है। लेकिन उसका मन इस घर में रम नहीं पाता। वह ललित के साथ जीवन बिताने का विचार करती है, यहाँ तक कि उसके साथ भाग जाने की संभावना भी मन में आती है, परंतु अंततः वह इस निर्णय से स्वयं को रोक लेती है। उसके मन में विद्रोह की भावना अवश्य उत्पन्न होती है, किंतु वह उसे खुलकर व्यक्त नहीं कर पाती। सामाजिक संस्कार और नैतिक मूल्य उसके लिए इतने प्रभावशाली सिद्ध होते हैं कि वह अपने व्यक्तिगत प्रेम का त्याग कर देती है। इसी कारण लेखिका ने कहानी का शीर्षक "एक कमजोर लड़की की कहानी" रखा है, जो नायिका के भीतर चल रहे भावनात्मक संघर्ष और सामाजिक बंधनों को प्रतीकात्मक रूप से व्यक्त करता है। नायिका 'रूप' के द्वारा लिखे गए पत्र की ये पंक्तियां कि "परिवार का कोई झंझट नहीं, घर में अकेली ही हूँ। साधनों का कोई अभाव नहीं, पर जिसकी सब साध ही मर गई हो, वह क्या करें इन साधनों को लेकर?"[9] उसकी भाव शून्यता को इंगित करता है।

मन्नू भंडारी की कुछ कहानियां ऐसी ही है जिनमें एक मां अपनी संतान के लिए जीवन में कई तरह की तकलीफों और संघर्षों का सामना करती है। मन्नू की 'संख्या के पार', 'मजबूरी' और 'रानी माँ का चबूतरा' इसी प्रकार की कहानियां हैं। इन कहानियों में संघर्ष के साथ–साथ स्वाभिमान भी झलकता हुआ दिखाई देता है। रानी माँ का चबूतरा कहानी में जब गुलाबी के बच्चे का नाम शिशु सुरक्षा केन्द्र में लिखवाने के लिए गांव के एक वृद्ध व्यक्ति द्वारा चंदा इकट्ठा करके नाम लिखवाने का सुझाव देते हैं तो गुलाबी उन पर भड़क जाती है। वह कहती है– "किसी के दान–पुन्न पर पलने वाली नहीं है गुलाबी, थूकती है तुम्हारे चन्दे पर।"[10] इस प्रकार मध्यवर्गीय महिला अपने जीवन में कठोर श्रम एवं संघर्ष करने के बावजूद अपने स्वाभिमान का त्याग नहीं करती एवं न ही किसी के सामने सहायता हेतु भीख मांगती है। वर्तमान में हमारे समाज में गुलाबी जैसे चरित्र से बहुत कुछ सीखने की जरूरत है तभी मध्यवर्गीय महिलाएं अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए आगे बढ़ पाएगी।

संदर्भ सूची

1. मन्नू भंडारी–एक कहानी यह भी (आत्मकथा), राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली, 2016,

2. मन्नू भंडारी–एक कहानी यह भी (आत्मकथा), राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली, 2016, पृष्ठ संख्या – अर्पण में
3. हंस पत्रिका, अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली, जनवरी–फरवरी, 2000, पृष्ठ संख्या – 18
4. एच. एन. राम–औरतनामा, प्रकाशन संस्थान, अंसारी रोड़, दरियागंज, नयी दिल्ली, (प्रथम संस्करण) 2013 पृष्ठ संख्या– प्रस्थान बिंदु – XI
5. प्रियदर्शन – बेटियों मन्नू की, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली, 2024 (पहला संस्करण) पृष्ठ संख्या–12
6. पाखी पत्रिका (सं. प्रेम भारद्वाज), प्रकाशक इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसायटी नोएडा, जनवरी 2016, अंक–4, पृष्ठ संख्या– 13
7. मन्नू भंडारी–संपूर्ण कहानियां (एक बार और) राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ संख्या – 320
8. मन्नू भंडारी–तीन निगाह की एक तस्वीर, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. जगतपुरी दिल्ली, प्रकाशन वर्ष चौथा संस्करण 2020, पृष्ठ संख्या – 63
9. मन्नू भंडारी–मैं हार गई (एक कमज़ोर लड़की की कहानी), राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. जगतपुरी, दिल्ली, छठा संस्करण 2022, पृष्ठ संख्या – 62
10. मन्नू भंडारी – यही सच है (रानी माँ का चबूतरा), राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. जगतपुरी, दिल्ली, नौवाँ संस्करण 2023, पृष्ठ संख्या 128